IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजनीतिक संचार में युवा नेतृत्व की भूमिका एवं उनके छवि निर्माण में भाषा-शैली का योगदान

(बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रेणु सिंह, सहायक प्रोफेसर ***एवं*** **कुमार प्रियतम,** पीएच.डी. शोधार्थी

जनसंचार विभाग,

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रस्तावना:

बिहार के इतिहास में मगध के कई युवा राजाओं का वर्णन मिलता है। चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक जैसे युवा नेतृत्व भी बिहार की धरती से ही जुड़े थे। इसलिए अक्सर कहा भी जाता है कि बिहार के लोगों में राजनीति की समझ, उनकी व्यापक ऐतिहासिक राजनीतिक चेतना का परिणाम है। वैसे राजनीति, शब्द अपने आप में व्यापक अर्थ समेटे हुए है। किसी को 'राजनीति' शब्द अच्छी लगती है तो किसी को बुरी। लेकिन फिर भी 'राजनीतिक विमर्श' में विविध विचारधाराओं वाले बिहार के लोगों की रुचि चुनावी राजनीति में लगभग एक समान दिखती है, इसलिए चुनाव के समय ऐसे 'राजनीतिक संचार' का दायरा काफी बढ़ जाता है, जिसमें आम लोगों की रुचि होती है। ऑक्सफोर्ड हैंडबुक (2014) के अनुसार राजनीतिक संचार को इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि "सत्ता के कार्यों को प्रतीकों के माध्यम से जनता के बीच साझा करना राजनीतिक संचार है।"[1] वहीं डैरेन जी. लिलेकर (2009) लिखते हैं कि, "राजनीतिक संचार का प्रयोग अक्सर तब किया जाता था जब अपनी सत्ता और शक्ति से किसी प्रतिद्वंदी का विरोध करना होता था।

[1] *The new Oxford Handbook of Political Communication* thus defines political communication as "making sense of symbolic exchanges about the shared exercise of power".
The Oxford Handbook of Political Communication, *Edited by Kate Kenski and Kathleen Hall Jamieson*

फिर भी मानवीय इतिहास में राजनीतिक संचार एक तरफा ही रहा है, यह ऊपर से नीचे की ओर यानि नेता से जनता की ओर होता आया था।"[2]

इन्दिरा गांधी के आपातकाल के दौरान बिहार की राजधानी पटना के गांधी मैदान से एक वयोवृद्ध नेता जयप्रकाश नारायण ने युवाओं को सम्पूर्ण क्रांति में भाग लेने के लिए आह्वान किया और उनके इस आह्वान पर युवाओं का हुजूम इस आंदोलन में भाग लेने के लिए सड़कों पर उतर आया था। इन युवाओं में बिहार के निवर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, लालू प्रसाद यादव, रामविलास पासवान, सुशील मोदी जैसे कई महत्वपूर्ण नेता भी शामिल थे। सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन में भाग लेने वाले कई युवा नेता आज भी सत्ता के शिखर पर विराजमान है। इसलिए वर्तमान युवा नेतृत्व इन लोगों के लिए कितनी चुनौती बन पाते हैं यह राजनीतिक संचार का एक अहम भाग है।

बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में पहली बार ऐसा भी देखा गया, कि यहां कई युवा नेतृत्व स्वयं को सिर्फ परख ही नहीं रहे थे बल्कि राज्य के सर्वोच्च राजनीतिक 'मुख्यमंत्री' पद के लिए अपनी दावेदारी पेश कर रहे थे। हालांकि इन युवा राजनेताओं का राजनीति में वर्चस्व भले न हो, पर उनकी लोकप्रियता इस बात से साबित होती है कि बिहार विपक्ष के कई महत्वपूर्ण दलों ने मौजूदा सरकार को चुनौती देने के लिए एक युवा नेतृत्व पर भरोसा जताया। इसलिए सत्ताधारी राजनीतिक दल और विपक्षी महागठबंधन के साथ साथ लगभग सभी दलों के लोग युवा विकास केन्द्रित प्रचार अभियान चलाते देखे गए। यदि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सात निश्चय, भाजपा का संकल्प पत्र, महागठबंधन का घोषणा पत्र, कांग्रेस के बदलाव संकल्प इत्यादि का विश्लेषण किया जाये तो इसमें भी युवाओं के मुद्दों को प्राथमिकता देने की बात स्पष्ट रूप से सामने आती है। इन युवा नेताओं ने भी अपने भाषणों में बिहार ढेढ देशी भाषा शैली को अपनाया एवं लोगों से जुडने के प्रयास किए। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि युवा मुद्दा बिहार की राजनीति में कितना महत्वपूर्ण है तथा युवा राजनेताओं ने किस प्रकार युवाओं के बीच प्रचलित होने के लिए उनकी संस्कृति और अस्मिता को अपनाकर उनके विश्वास को जीतने का प्रयास किया।

[2] Lilleker, Darren G., (2009) *Key Concepts in Political Communication*, New Delhi, Sage Publication India Pvt Ltd.

राजनीतिक संचार एवं क्षेत्रीय भाषा शैली

बिहार की राजनीति में लोकप्रियता प्राप्त करने में राजनेताओं की भाषा शैली एवं उनके ठेठ अंदाज भी बहुप्रचलित रहे हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की प्रसिद्धि उनके गवई एवं ठेठ अंदाज से थी। लालू प्रसाद यादव के देशी अंदाज एवं ठेठ भाषा में दिए गए भाषणों ने न सिर्फ बिहार में अपितु पूरे देश में उनकी लोकप्रियता बढ़ाई थी। बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी अपने राजनीतिक कौशल से बिहार की जनता का विश्वास जीता है। उन्होंने जाति, धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर अपनी छवि विकास पुरुष के रूप में गढ़ी है। बिहार में शराबबंदी लगवा कर, महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण देकर, जीविका दीदी बनाकर और महिलाओं को साइकिल देकर नीतीश कुमार महिलाओं के सबसे बड़े हितैषी बन गए हैं। नीतीश कुमार ने भी महिलाओं से सीधा संपर्क साधने एवं उनमे अपनी विश्वसनीयता बनाने के लिए देशी ठेठ भाषा का हीं प्रयोग किया है ताकि कम पढ़ी लिखी माताएं- बहनें उनकी बातों को आसानी से समझ सकें तथा उन्हें अपने समाज के बीच से निकला हुआ राजनेता समझें। अपनी अतिविशिष्ट संचार शैली एवं राजनीतिक कौशल के कारण लोकप्रिय, बहुचर्चित राजनेता और देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी जनता के बीच अपनी सहज एवं सरल भाषा की वजह अपनी अलग पहचान बना लेते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्वीकार्यता पूरे देश मे हीं नहीं पूरे विश्व में देखी जा सकती है। उनके उतरदायी, जिम्मेदार, विश्वसनीय एवं कुशल राजनेता के छवि को जनता ने बहुत खुशी से स्वीकार किया है। बिहार की जनता के बीच भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक लोकप्रिय, उतरदायी एवं अपनी जड़ों से जुड़े नेता के रूप में प्रचलित हैं।

सैद्धांतिक परिपेक्ष्य: राजनीतिक संचार में एक राजनेता के लिए लोकप्रियता प्राप्त करना एकमात्र उद्देश्य नहीं होता अपितु जनता का उसपर विश्वास, राजनेता के अनुभव पर उनका भरोसा एवं उसके कार्यशैली पर उनकी आस्था हीं सही मायनों में एक राजनेता को राजनीति में सफल बनाती है। जनता का विश्वास एवं निष्ठा को प्राप्त करने के लिए हीं राजनेता ज्यादा से ज्यादा लोगों से जुड़ना चाहते हैं तथा खुद उनके बीच से निकला हुआ साधारण व्यक्ति दर्शाना चाहते हैं। जनता से अपनत्व प्राप्त करने के लिए राजनेता उस क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा, पहनावा और हाव भाव पर ज्यादा महत्व देते हैं तथा मंच पर या लोगों से मिलते या बात करते वक्त उसका प्रयोग करते हैं। राजनेताओं का जनता की संस्कृति और परंपरा से जुडने की शैली को सांस्कृतिक पहचान सिद्धांत द्वारा समझा जा सकता है। सांस्कृतिक पहचान सिद्धांत से तात्पर्य है कि

एक व्यक्ति हमेशा अपनी जड़े एक विशेष संस्कृति या समाज के साथ स्थापित करके रखना चाहता है। वह संस्कृति या समाज उसकी अस्मिता एवं पहचान का हिस्सा होता है। अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए एक व्यक्ति अपनी परंपरा, विरासत, भाषा, धर्म, वंश परंपरा, चिंतन परंपरा एवं अपनी संस्कृति के सामाजिक संरचना को अपनाता है ताकि वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहे और अपनी अस्मिता को पहचान दे सके। जब एक राजनेता समाज के किसी वर्ग के संस्कृति, रीति रिवाज, परंपरा, भाषा या धर्म से जुडते हैं तो वह समाज उस राजनेता को खुद की सांस्कृतिक पहचान के निकट समझता है और उससे उस समाज को कोई खतरा महसूस नहीं करता। इसी कारण प्राय यह देखा गया है मंच पर भाषण देने से पहले राजनेता उस क्षेत्र के लोकप्रिय नेता की प्रतिमा पर हार चढ़ाने, उनके क्षेत्रीय पूजा स्थल पर जाने या उस क्षेत्र की टोपी, पगड़ी या मुरेठा बांधे नजर आते हैं। बिहार चुनाव 2020 में भी राजनेता बिहार की जनता से जुडने के लिए उनकी भाषा, पहनावा, रीति रिवाज, परंपरा को अपनाने के साथ अपनी जड़ों को बिहार की संस्कृति से स्थापित करने का अथक प्रयास करते नजर आए।

शोध प्रश्न -

- इस शोध पत्र द्वारा यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि बिहार विधानसभा चुनाव- 2020 में युवा नेतृत्व इतना महत्वपूर्ण मुद्दा क्यूँ बन गया?
- इस शोध पत्र द्वारा यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि युवा नेतृत्व बिहार विधानसभा चुनाव में अपने राजनीतिक छवि निर्माण में अपने भाषा शैली, पहनावा एवं सांस्कृतिक पहचान को किस प्रकार बिहार की जनता के समक्ष प्रस्तुत कर अपनी लोकप्रियता को बढ़ाने में प्रयोग किया।

शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध पत्र में बिहार की राजधानी पटना से प्रकाशित मुख्य धारा के चार प्रमुख हिन्दी समाचार पत्रों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। चयनित अखबारों में दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर एवं प्रभात खबर के पटना संस्करण की प्रकाशित प्रतियों के मतदान दिवस के तीन दिन क्रमशः 28 अक्टूबर, 3 एवं 7 नवंबर 2020 और परिणाम दिवस के दो दिन क्रमशः 11 एवं 12 नवंबर 2020 की प्रतियों का विषयवस्तु विश्लेषण विधि से अध्ययन किया गया है। वहीं मुख्य धारा के टीवी समाचार चैनलों के यूट्यूब चैनल एवं वेब समाचार पोर्टलों की खबरों के साथ-

साथ द्वितीयक आकड़े के रूप में कई महत्वपूर्ण पुस्तकों, रिपोर्टों एवं आलेखों का समीक्षात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है। अर्थात प्रस्तुत शोध पत्र, साहित्य समीक्षा पर आधारित होने के साथ साथ अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि से अध्ययनोपरांत तैयार की गई है।

ट्वीटर ट्रेंड और युवा केन्द्रित चुनावी मुद्दे का विश्लेषण

राजनीतिक संचार में ट्वीटर जैसी सोशल मीडिया का महत्व आज वैश्विक तौर पर स्वीकृत माना जाता है, क्योंकि इससे किसी भी सीमित शब्दों के संदेश को सत्ता के शीर्ष तक या शीर्ष से आम जन तक इंटरनेट आधारित उपकरणों की सहायता से पहुंचाया जा रहा है। भारत के चुनाव में भी अब सोशल मीडिया की भूमिका चुनाव दर चुनाव बढ़ती ही जा रही है, अन्यथा चुनाव आयोग[3] को सोशल मीडिया के अनुचित उपयोग करने पर कार्यवाई की बात करने की जरूरत नहीं पड़ती।

यहाँ सबसे पहले सोशल मीडिया, खासकर ट्वीटर के एक ट्रेंड का विश्लेषण करना इसलिए जरूरी हो जाता है क्योंकि यह ट्रेंड कुछ समय बाद बिहार विधानसभा चुनाव में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया और इस एक मुद्दे ने बिहार में एक 31 वर्षीय युवा नेता तेजस्वी यादव को, युवाओं के बीच लोकप्रियता हासिल करने में मदद की क्यूंकि ट्वीटर कहीं न कहीं युवाओं के संचार एवं संप्रेषण का माध्यम है। अत: जब युवाओं का मुद्दा अगर युवाओं के मंच पर रखा जाएगा तो उस मुद्दे युवाओं के बीच प्रचलित होना स्वाभाविक है।

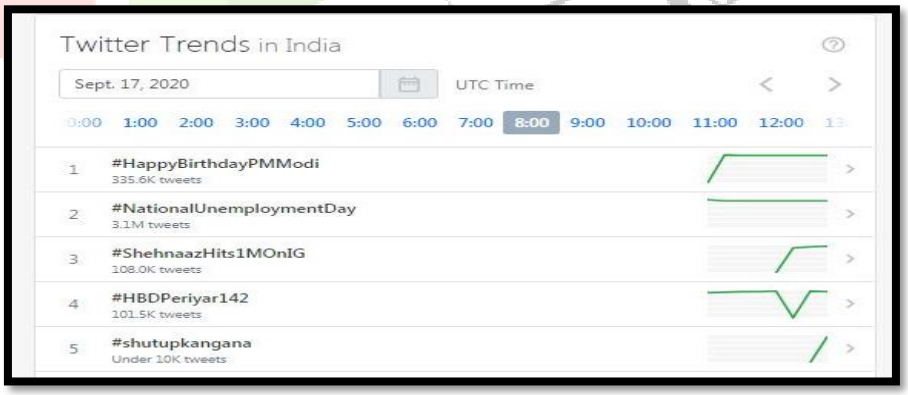

Figure 1 - getdaytrends.com से साभार लिया गया ट्वीटर ट्रेंड

[3] **Bihar polls: EC warns of action if social media misused to promote caste, communal violence**
https://economictimes.indiatimes.com/news/elections/assembly-elections/bihar/bihar-polls-ec-warns-of-action-if-social-media-misused-to-promote-caste-communal-violence/articleshow/78434205.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst

उक्त चित्र से स्पष्ट है कि 17 सितंबर, 2020 की सुबह 8 ही बजे तक ट्विटर पर करीब 3.1 मिलियन यानि 30 लाख, 10 हज़ार ट्वीट्स के साथ #NationalUnemploymentDay[4] शीर्ष पाँच में दूसरे स्थान पर ट्रेंड कर रहा था। तब कुछ वेबसाइट ने इसे एक खबर जरूर बनाया। कोरोनाकाल की देशव्यापी बंदी के कारण बदलती परिस्थितियों में लाखों लोगों को अपने रोजगार एवं नौकरी गंवानी पड़ी थी, इससे युवा वर्ग भी एक बड़ी संख्या में प्रभावित रहा था। इस वैश्विक महामारी के समय भी कई राजनीतिक दलों द्वारा इसका राजनीतिक लाभ, बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान युवाओं के मत को लामबंद करके उठाया।

विपक्षी महागठबंधन के नेता तेजस्वी यादव ने अपने घोषणा पत्र में युवाओं को 10 लाख सरकारी नौकरी[5] देने का वादा कर मीडिया में सुर्खी बटोरनी शुरू की दी थी परंतु जल्द हीं एनडीए की ओर से केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी अपनी बिहार से संबन्धित चुनावी 'संकल्प पत्र' में 19 लाख रोजगार[6] देने की बात सामने रख अपनी प्रतिक्रिया दी। स्पष्ट है कि जल्द हीं बेरोजगारी बिहार विधान सभा चुनाव में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। रोजगार का मुद्दा बिहार के लिए एक बड़ा मुद्दा इसलिए भी बन पाया, क्योंकि यहाँ देश के सबसे ज्यादा युवा मतदाता थे । यही कारण है कि बिहार विधानसभा चुनाव में कई युवा राजनेता ने, एक प्रकार से 'युवा हितैषी छवि' के रूप में स्वयं को पेश कर, बिहार के युवा मतदाताओं से युवाओं के महत्वपूर्ण मुद्दे पर संचार कर रहे थे, इसलिए राजनीतिक संचार में युवा नेतृत्व का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

[4] Twitter Trends in India. https://getdaytrends.com/india/2020-09-17/8

[5] **महागठबंधन ने घोषणा पत्र जारी किया**

https://www.bhaskar.com/local/bihar/news/bihar-assembly-election-2020-mahagathbandhan-issued-declaration-letter-repeated-10-lakh-permanent-job-promises-127821905.html

[6] BJP का घोषणा पत्र: 19 लाख रोजगार का वादा और आत्मनिर्भर सक्षम बिहार का संकल्प

https://www.livehindustan.com/assembly-elections/bihar-election-2020/story-bihar-chunav-2020-bjp-manifesto-for-bihar-assembly-elections-corona-vaccine-free-19-lakh-jobs-promised-3581587.html

बिहार की युवा आबादी का विश्लेषण

भारत सरकार के राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग द्वारा जारी "भारत में युवा-2017" रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011 में भारत में युवाओं की आबादी करीब 42 करोड़ 19 लाख थी, जिसके वर्ष 2021 तक करीब 47 करोड़ 94 लाख तक पहुंच जाने का अनुमान है। वर्ष 2011 में भारत के संपूर्ण आबादी में से युवाओं की जनसंख्या, करीब 34 प्रतिशत से अधिक थी, वहीं वर्ष 2021 में भी यह करीब 34 प्रतिशत ही बने रहने की संभावना है। ज्ञात हो कि "भारत में युवा-2017" रिपोर्ट में विश्व बैंक के आकड़े के आधार पर भारत में 15 से 29 वर्ष (राष्ट्रीय युवा नीति-2014 के अनुसार परिभाषित युवा) तक के युवाओं की जनसंख्या बताई गई है।

"बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2019-20" के अनुसार बिहार की आबादी करीब 10 करोड़ 41 लाख (जनगणना, वर्ष 2011) है। जिसमें 9.23 करोड़ लोग ग्रामीण क्षेत्रों में और करीब 1.18 करोड़ लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। वहीं वर्ष 2019 में ही यह अनुमान लगाया गया था कि बिहार की आबादी करीब 12 करोड़ 48 लाख तक पहुंच गई है। **"भारत में युवा-2017"** रिपोर्ट के अनुसार जब भारत में युवाओं की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 34 प्रतिशत है, तब इसके अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या में से 34 प्रतिशत संख्या युवाओं की मानी जा सकती है, अर्थात बिहार में युवाओं की संभावित जनसंख्या वर्ष 2011 में करीब 3.53 करोड़ थी, वहीं वर्ष 2019 में ही यह संख्या बढ़कर करीब 4.24 करोड़ तक पहुंच गई है। अतः कुछ विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि वर्ष 2019 में ही बिहार में युवाओं की जनसंख्या करीब सवा चार करोड़ तक पहुंच गई है। अतः युवाओं के इस आकड़े को देखकर समझा जा सकता है कि बिहार में युवा नेतृत्व की लोकप्रियता क्यों बढ़ी।

बिहार के युवा राजनेताओं के छवि निर्माण कौशल का विश्लेषण

तेजस्वी यादव (राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष)

बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में वैसे चार प्रमुख युवा राजनेताओं के नाम राजनीतिक संचार के केंद्र बिन्दु पर रहे थे, जिसमें पहला नाम राष्ट्रीय जनता दल के तेजस्वी यादव का आता है जो कई विपक्षी दलों के गठबंधन के नेता के रूप में 'मुख्यमंत्री' पद के लिए दावेदारी कर खुद को बिहार की राजनीति में स्थापित किया है। तेजस्वी यादव 2015 के बिहार चुनाव के बाद उपमुख्यमंत्री भी रह चुके हैं। वहीं कोरोना काल से उपजी आर्थिक मंदी के इस दौर में

युवाओं को सरकार में आते ही दस लाख सरकारी नौकरी देने का वादा कर युवा मतदाताओं को अपनी सभाओं में खींचने में कामयाब रहे। कोरोना काल में भी कोटा में फंसे बिहारी विद्यार्थियों के मुद्दे और बिहार वापस आ रहे मजदूरों की सुरक्षा पर नीतीश सरकार से लगातार सवाल कर सोशल मीडिया में अपनी लगातार उपस्थिती दर्ज़ कराने वाले तेजस्वी ने जब 10 लाख सरकारी नौकरी देने की घोषणा की। तब इस घोषणा ने ही तेजस्वी को युवाओं के बीच लोकप्रिय बना दिया और उनकी सभाओं में भीड़ उमड़ने लगी।

तेजस्वी ने एक ठेठ बिहारी के रूप में अपने संचार कौशल का परिचय देते हुए स्वयं को एक ऐसे योद्धा के रूप में भी पेश किया, जिसने अपनी पार्टी की ओर से अकेले ही चुनाव प्रचार की कमान संभाला। लेकिन इन सबके बावजूद अपने गठबंधन को बहुमत तक पहुँचाने में नाकामयाब रहे। तेजस्वी यादव को प्रिंट या इलेक्ट्रोनिक मीडिया विश्लेषणों में एक ऐसे मजबूत युवा राजनेता के रूप में पहचान मिली, जिस पर उनके पिता लालू प्रसाद यादव के जंगलराज का असर नहीं देखा गया। तेजस्वी यादव ने भी अपने चुनावी प्रचार सामग्रियों से अपने माता-पिता के चेहरे को दूर कर, इस चुनाव में स्वयं के चेहरे पर ही केन्द्रित किया, ताकि वंशवाद और भ्रष्टाचार का प्रभाव उनके राजनीतिक जीवन पर न पड़े। हालांकि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें जंगलराज के युवराज की उपाधि प्रदान कर अपने करिश्माई संचार शैली और नेतृत्व के दम पर मुख्यमंत्री पद से वंचित कर ही दिया।

चिराग पासवान (लोक जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष)

लोक जनशक्ति पार्टी अध्यक्ष चिराग पासवान वर्तमान एनडीए के केंद्र सरकार में एक सहयोगी पार्टी के रूप में साथ होने के वावजूद, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ चुनावी मोर्चा खोले हुए दिखे। चिराग पासवान ने अपने राजनीतिक संचार से बिहार के मतदाताओं से यही संचार किया कि उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व तो स्वीकार है, लेकिन बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को अपना नेता मानने से साफ इंकार करते हैं। इसलिए जेडीयू के खिलाफ अपनी पार्टी के टिकट पर उम्मीदवार उतार उसे नुकसान पहुंचाना उनका प्राथमिक लक्ष्य था, जिसमें वो स्वयं को सफल मानते हैं क्योंकि जदयू को इस चुनाव में पिछले वर्ष की तुलना में उतनी जीत हासिल नहीं हो सकी, जितनी की आशा की गई थी। आकड़ों का विश्लेषण किया जाये तो बिहार के कुल 135 विधानसभा सीटों पर लोजपा चुनाव में उतरी, लेकिन सिर्फ एक ही सीट पर उसके उम्मीदवार जीतने में सफल रहे। परंतु चिराग पासवान के संचार शैली ने उन्हे बिहार 2020 चुनाव में पहचान दिलाई।

पुष्पम प्रिया चौधरी (द प्लुरल्स पार्टी की अध्यक्ष)

पुष्पम प्रिया चौधरी ने लंदन के मशहूर लंदन स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स से पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स की डिग्री ली है। पुष्पम प्रिया ने सबसे पहले प्रमुख अखबारों के पहले पन्ने पर मार्च 2020 महीने में ही विज्ञापन देकर स्वयं को बिहार की मुख्यमंत्री पद की उम्मीदवार घोषित कर चुकी थी। बिहार के दरभंगा में जन्मी पुष्पम प्रिया चौधरी, यहां के सत्ताधारी दल जेडीयू के नेता एवं पूर्व एमएलसी विनोद चौधरी की बेटी तो हैं, लेकिन उनका स्टाइल परंपरागत राजनीति से अलग एक नई तरह की राजनीति करने की है, जिसके लिए वो लगातार कोशिश करती दिखी। अपने दिये गए विज्ञापन में उन्होने 2025 तक बिहार को एक विकसित राज्य बनाने की बात करती हैं। हमेशा काले कपड़ों और काला मास्क लगाए मीडिया में दिखने वाली पुष्पम प्रिया चौधरी स्वयं पटना के एक विधानसभा सीट बांकीपुर से चुनाव मैदान में उतरी, उन्हें लगभग पाँच हज़ार ही मत प्राप्त हुए। इस लिहाज से देखे तो राजनीति की जमीन पर उन्हें अभी और मजबूती से खड़े होने की जरूरत है। यह इसलिए कि उनकी पार्टी के एक भी उम्मीदवार को जीत हासिल नहीं हुई और वो स्वयं तीसरे नंबर पर रहीं, वहीं उनके कई उम्मीदवारों के नामांकन तक रद्द हुए। प्लुरल्स पार्टी का चुनाव चिन्ह 'चेस बोर्ड' था। राजनीति में जहाँ सभी सफेद वस्त्र पहनते हैं, वहीं पुष्पम प्रिया चौधरी ने अपनी अलग छवि निर्माण करने हेतु काले वस्त्र धारण किए, जिससे उन्होंने लोगों का ध्यान आकृष्ट तो किया परंतु अपने भाषणों से प्रदेश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान नहीं बना सकीं और न हीं लोगों का विश्वास जीत सकीं।

मुकेश सहनी (विकासशील इंसान पार्टी के अध्यक्ष)

एनडीए गठबंधन के सदस्य रहे मुकेश सहनी सिमरी बख्तियारपुर से चुनाव लड़े पर उन्हे जीत हासिल नहीं हो सकी। हालांकि उनकी पार्टी के चार सदस्य जीतकर पहली बार विधानसभा पहुच गए हैं। इस चुनाव में तमाम एग्जिट पोल के नतीजों के विपरीत एनडीए गठबंधन को कुल 125 सीटों पर जीत हासिल हुई और इसने 122 के बहुमत के आकड़ों को भी पार किया। ऐसे में महज़ चार सीट प्राप्त वीआईपी पार्टी के मुकेश सहनी जैसे युवा नेता का महत्व बढ़ना स्वाभाविक ही है क्योंकि यदि ये एनडीए से अलग हुए तो सरकार बहुमत के आकड़े से नीचे चली जाएगी। मुकेश सहनी सीटों के बँटवारे के दिन तक विपक्षी महागठबंधन के सदस्य रहे थे, लेकिन वे अपने साथ हुए वादा खिलाफी का आरोप लगाते हुए महागठबंधन से अलग होकर, एनडीए के साथ हो गए। इन्हें भाजपा ने अपने कोटे से 11 सीटें दीं,

जिसपर उनके चार उम्मीदवार जीत हासिल करने में सफल रहे लेकिन खुद लगभग 1700 मतों से चुनाव हार गए। फिर भी मुकेश सहनी का बिहार की राजनीति में महत्व बढ़ा है।

कन्हैया कुमार (वर्तमान सीपीआई के सदस्य एवं जेएनयू छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष)

कन्हैया कुमार जो सीपीआई के वर्तमान नेता और पूर्व जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष रहे है। पिछले लोकसभा चुनाव 2019 में बिहार के बेगूसराय में भाजपा के गिरिराज सिंह से कई लाख मतों के अंतर से हारे थे। हालांकि कोरोना काल से पहले उन्होने अपनी 'जन गण मन' यात्रा से बिहार की राजनीति में दस्तक देने की शुरुआत की थी। कन्हैया कुमार सीपीआई के स्टार प्रचारकों में से एक थे, लेकिन इनका दायरा बहुत ही सीमित रहा। कन्हैया ने तेजस्वी के साथ एक भी चुनावी सभा को संबोधित नहीं किया। वहीं राजधानी पटना से प्रकाशित अधिकांश प्रिंट मीडिया के चयनित प्रतिदर्श में कन्हैया कुमार के बारे में बहुत कम चर्चा या समाचार मौजूद थे। हालांकि वेब और सोशल मीडिया पर कन्हैया कुमार के साक्षात्कार और भाषण बड़ी संख्या में मौजूद है। इनकी पार्टी वर्तमान में राजद गठबंधन में शामिल होकर दो सीट जीतने में कामयाब रही है।

प्रशांत किशोर (राजनीतिक रणनीतिकार एवं जनता दल 'यू' के पूर्व उपाध्यक्ष)

राजनीतिक रणनीतिकार और चुनाव प्रबन्धक के रूप में पहचाने जाने वाले प्रशांत किशोर का बिहार की राजनीति में पदार्पण तब हुआ, जब वे जनता दल यू में शामिल हुए और जब उन्हें जदयू में उपाध्यक्ष का पद मिला तब ऐसा प्रतीत हुआ कि नीतीश कुमार को अपना राजनीतिक वारिस मिल गया है। हालांकि उन्होने अपने चुनाव प्रबंधन का कार्य जारी रखा। इसी बीच जदयू में कुछ आंतरिक मतभेद होने के बाद प्रशांत किशोर को पार्टी से निष्काषित कर दिया गया[7]। जिसके बाद एक प्रेस वार्ता कर प्रशांत ने यह जानकारी दी कि वो बिहार के युवाओं को अपने साथ जोड़ने के लिए यात्रा शुरू करेंगे, लेकिन कोरोना के कारण यह यात्रा शुरू ही नहीं हो सकी। हालांकि नीतीश कुमार को पितातुल्य[8] बताकर उनपर राजनीतिक हमले जारी रखा। साथ ही बिहार के युवाओं की राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रशांत किशोर "बात बिहार की" नामक कई व्हाट्स एप्प ग्रुप चला युवाओं को अपने साथ जोड़ने और उनसे संवाद का काम जारी रखा हुआ है। इस ग्रुप में उनकी टीम के सदस्य अक्सर बिहार के मुद्दों से संबंधित आकड़े एवं समाचार पोस्ट

[7] https://www.bbc.com/hindi/india-51326121
[8] https://www.bbc.com/hindi/india-51541018

करते रहते है, ऐसे पोस्ट आमतौर पर सरकार से सवाल के रूप में किए जाते है जिसमें अक्सर निशाने पर नीतीश कुमार और बिहार की सरकार होती है। कोरोना काल में भी कोटा में फंसे बिहारी युवा छात्रों को वापस लाने के मुद्दे पर नीतीश कुमार की ट्वीट कर आलोचना की थी। वहीं बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं परंतु अप्रत्यक्ष रूप से युवा मतदाताओं को प्रभावित करते देखे गए। यदि उनके भविष्य की राजनीतिक महत्वाकांक्षा में बिहार की राजनीतिक जमीन तैयार करने की है तो इसकी शुरुआत युवाओं को जोड़ने की घोषणा से ही कर चुके हैं।

नरेंद्र मोदी एवं नीतीश कुमार की जोड़ी (राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन)

बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सांझा रैलियाँ की जिससे जनता के बीच एनडीए पार्टी पर विश्वास और भरोसा बढा। बिहार की जनता मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार की कार्यशैली को पहले भी देख चुकी थी परंतु जब प्रधान मोदी का भी साथ और भरोसा नीतीश कुमार के साथ जुड़ा दिखा तो लोगों को यह विश्वास हो गया कि यह गठबंधन बेहतर तरीके से कार्य करेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार के लोगों में पहले से प्रचलित हैं और वे लगातार अपने विकास संबंधी कार्य की वजह से अपनी विश्वसनीयता बना चुके हैं। जब उन्हे प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी रैलियों में सम्मान दिया और उनके नेतृत्व पर अपना विश्वास जताया तब बिहार की जनता इस बात पर पूरी तरह आश्वस्त हो गई कि एनडीए विकास के मुद्दों पर अवश्य कार्य करेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब एक नवयुवा राजनीतिज्ञ तो नहीं हैं परंतु उनकी लोकप्रियता एवं विश्वसनीयता युवाओं की बीच अवश्य देखी जा सकती है। प्रधानमंत्री मोदी अपनी अनुशासित दिनचर्या, योग, व्यायाम एवं सक्रियता के कारण जनता के बीच एक ऊर्जावान एवं जीवंत व्यक्तित्व के रूप में अपनी विशिष्ट छवि निर्मित कर चुके हैं। प्रधानमंत्री मोदी की सरल एवं सहज भाषा ने उन्हे जनता के बीच बहुत लोकप्रिय बनाया है। अत: अपितु उम्र की दृष्टि में भले हीं प्रधानमंत्री मोदी युवा न हों परंतु व्यक्तित्व, राजनीतिक कौशल, विश्वसनीयता, कूटनीति, भाषा कौशल इत्यादि क्षेत्रों में वे सभी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

जब राष्ट्रीय जनता दल ने बेरोजगारी का मुद्दा उठाया तब एनडीए ने भी जल्द हीं अपने संकल्प पत्र में 19 लाख रोजगार देने का वायदा किया। एनडीए ने विपक्ष द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों का जबाब देने के साथ-साथ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा किए गए विकास कार्यों का भी उल्लेख किया तथा पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के जंगलराज की भी याद दिलाते दिखे। एनडीए ने सिर्फ युवाओं को लक्षित करके अपना चुनाव प्रचार नहीं किया अपितु महिलाओं, बच्चों,

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जैसे पिछड़ा वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग, दलित, महादलित इत्यादि सभी के साथ जुडने का प्रयास किया और सभी को केंद्र में रखकर अपना चुनाव प्रचार किया। जनता ने प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश के राजनीतिक अनुभव और कूटनीति पर अपना विश्वास जताया और एनडीए ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में बहुमत से सरकार बनाई।

बिहार परिणाम स्थिति			
243 निर्वाचन क्षेत्रों में से 243 की ज्ञात स्थिति			
दल का नाम	विजयी	आगे	कुल
ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन	5	0	5
बहुजन समाज पार्टी	1	0	1
भारतीय जनता पार्टी	74	0	74
कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया	2	0	2
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिसिस्ट)	2	0	2
कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिसिस्ट - लेनिनिस्ट) (लिबरेशन)	12	0	12
हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर)	4	0	4
निर्दलीय	1	0	1
इंडियन नेशनल कॉंग्रेस	19	0	19
जनता दल (यूनायटेड)	43	0	43
लोक जन शक्ति पार्टी	1	0	1
राष्ट्रीय जनता दल	75	0	75
विकासशील इंसान पार्टी	4	0	4
कुल	243	0	243

Figure 2- संदर्भ: चुनाव आयोग की वेबसाइट

निष्कर्ष

उक्त चुनावी परिणाम के आकड़ों के विश्लेषण एवं युवा राजनेताओं की भूमिका की समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बिहार में युवाओं की जनसंख्या ने बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में एक प्रमुख भूमिका निभाई है क्योंकि "देश में सबसे ज्यादा युवा मतदाता बिहार में ही हैं" (28 अक्टूबर, हिंदुस्तान)। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि पिछले वर्ष 2019 में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में बिहार के अधिकांश युवाओं ने नरेंद्र मोदी को अपना प्रधानमंत्री चुनने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसलिए यह कहना सटीक होगा कि प्रधानमंत्री मोदी की विश्वसनीयता जनता के बीच पहले से थी और जनता ने फिर से उनके वायदों पर भरोसा जताया। परंतु जब बात राज्य

के नेतृत्व पर आती है, तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगातार अपने विपक्षी दलों के निशाने पर रहने के वावजूद, कई युवा राजनीतिक चेहरों के होते हुए भी मुख्यमंत्री का पद अपने पास यथावत रख पाने में कामयाब रहे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की लोकप्रियता बिहार की जनता के बीच हमेशा से रही है और लोग उनकी कार्यशैली, विकास कार्यों के प्रति उनकी लगन एवं उनकी कर्मठता से प्रभावित रहे हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार समाज के सभी वर्गों को साथ में लेकर चलने में विश्वास करते हैं तथा अपनी संचार और नेतृत्व क्षमता से जनता का भरोसा प्राप्त कर चुके हैं।

बिहार के इन युवा राजनेताओं में से तीन राजनीतिक परिवार से और तीन अपनी पीढ़ी के पहले नेता हैं। प्रशांत किशोर, मुकेश सहनी और कन्हैया कुमार अपने-अपने परिवारों से पहली बार राजनीति में आए हैं। तेजस्वी यादव को पिता की राजनीतिक जमीन से सीधे बिहार की सत्ता में उप मुख्यमंत्री बनने का मौका एक बार मिल चुका है। परंतु बिहार 2020 के चुनाव में तेजस्वी, जिस प्रकार युवाओं से जिस ठेठ बिहारी अंदाज़ में संचार करते नज़र आए, उससे उनकी नेतृत्व क्षमता की चर्चा मीडिया मे पूरे चुनाव के दौरान होती रही, कुछ मीडिया ने तो उन्हें भावी मुख्यमंत्री तक घोषित कर दिया था। वहीं अपने पिता रामविलास पासवान की विरासत और लोजपा नेता के रूप में पदार्पण करने से पहले चिराग पासवान, एक अभिनेता के रूप में सिनेमा के पर्दे पर दिख चुके है। वर्तमान चुनाव में अपने कई साक्षात्कार और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर कड़ा प्रहार कर युवाओं के बीच एक नेता की स्वतंत्र छवि गढ़ने में भी लगभग कामयाब रहे हैं। चिराग ने जहां 'बिहार और बिहारी फर्स्ट' के नारे के साथ नीतीश कुमार को सीधी चुनौती दी, वहीं तेजस्वी ने नीतीश कुमार को थका हुआ बताकर उन्हें वोट नहीं देने की अपील मतदाताओं से की। वहीं एक सनसनी के रूप में रातो रात विज्ञापन देकर सीधे मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में अपनी राजनीतिक पहचान बनाने वाली पुष्पम प्रिया चौधरी के लिए बिहार 2020 चुनाव का पहला अनुभव कड़वा ही कहा जा सकता है, यदि वो इस अनुभव से सीख कर आगे अपना कार्य जारी रखती हैं तो बिहार की राजनीति में उनकी संभावना अभी खत्म नहीं हुई है।

इस चुनाव परिणाम ने राजद के तेजस्वी यादव को एक कुशल नेता के रूप में सत्ता तक तो नहीं पहुंचा सका, लेकिन एक भविष्य के राजनेता के रूप में स्थापित जरूर कर दिया, वहीं रामविलास पासवान के बेटे चिराग पासवान ने भी लोकप्रियता हासिल की है। वामपंथी दलों की बिहार में वापसी में उनके नेता कन्हैया कुमार के नेतृत्व को एक भविष्य के नेता के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही मुकेश सहनी का बिहार में जनाधार तो नहीं बढ़ा लेकिन कुछ सीटें जीतकर वो एक नेता के रूप में अवश्य स्थापित हुए हैं। प्रशांत किशोर की बात करें तो उनके मीडिया प्रबंधन के

गुण की वजह से वो अब किसी परिचय के मोहताज भले ही न हो, लेकिन अभी भी एक राजनेता बनने के लिए और सफर तय करना जरूरी लगता है।

संदर्भ

1. Lilleker, Darren G., (2009). *Key Concepts in Political Communication*. New Delhi: Sage Publication India Pvt Ltd.
2. Kenski, K. & Jamieson, K.H. (2014). *The Oxford Handbook of Political Communication.* DOI: 10.1093/oxfordhb/9780199793471.013.77
3. Bihar Economic Survey (2019-20). Finance Department, Government of Bihar.
4. McKinsey Global Institute, report (2019). Digital India Technology to transform a connected nation. Youth in India (Report-2017)
5. W. Julia, 2020. What Is Youth Political Participation? Literature Review on Youth Political Participation and Political Attitudes. Front. Polit. Sci., 15 May 2020 https://doi.org/10.3389/fpos.2020.00001
6. https://www.amarujala.com/bihar/who-is-plurals-party-president-pushpam-priya-chaudhary-presented-himself-as-cm-candidate
7. https://www.tv9bharatvarsh.com/state/bihar/full-biodata-of-pushpam-priya-chaudhary-cm-candidate-in-bihar-election-302700.html
8. https://www.tv9bharatvarsh.com/state/bihar/full-biodata-of-pushpam-priya-chaudhary-cm-candidate-in-bihar-election-302700.html
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A3_%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A4%BF
10. Bihar polls: EC warns of action if social media misused to promote caste, communal violence Retrieved from: https://economictimes.indiatimes.com/news/elections/assembly-elections/bihar/bihar-polls-ec-warns-of-action-if-social-media-misused-to-promote-caste-communal-violence/articleshow/78434205.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst
11. Twitter Trends in India. https://getdaytrends.com/india/2020-09-17/8/
12. https://www.bbc.com/hindi/india-51326121
13. https://www.bbc.com/hindi/india-51541018
14. **महागठबंधन ने घोषणा पत्र जारी किया** Retrieved from: https://www.bhaskar.com/local/bihar/news/bihar-assembly-election-2020-mahagathbandhan-issued-declaration-letter-repeated-10-lakh-permanent-job-promises-127821905.html
15. **Prashant Kishor (2020, April 19).** Retrieved from https://twitter.com/PrashantKishor/status/1251799942798041088
16. **BJP का घोषणा पत्र: 19 लाख रोजगार का वादा और आत्मनिर्भर सक्षम बिहार का संकल्प** Retrieved from: https://www.livehindustan.com/assembly-elections/bihar-election-2020/story-bihar-chunav-2020-bjp-manifesto-for-bihar-assembly- elections-corona-vaccine-free-19-lakh-jobs-promised-3581587.html